

यातायात जागरूकता का प्रासंगिक आयाम (छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. रवीन्द्र नाथ शर्मा

विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य एम.ए.(समाजशास्त्र)

श्री साई बाबा आदर्श स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर, जिला-सरगुजा, छत्तीसगढ़

महेश कुमार मिश्रा

(शोधार्थी समाजशास्त्र) राष्ट्रपति पदक विजेता

शासकीय राजमोहिनी देवी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर, जिला-सरगुजा, छत्तीसगढ़

सारांश:

यातायात नियमों की परिपालन संबंधी जागरूकता किसी भी समाज में सुरक्षा, अनुशासन और सतत विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। बढ़ती जनसंख्या, तीव्र नगरीकरण और वाहनों की संख्या में निरंतर वृद्धि के कारण सड़क दुर्घटनाओं और यातायात अव्यवस्था की समस्या गंभीर रूप से उभर रही है। छत्तीसगढ़ राज्य के कोरिया जिले में ग्रामीण और शहरी जीवन का मिश्रण होने के कारण यातायात नियमों का पालन और जागरूकता का स्तर भिन्न है। इस अध्ययन का उद्देश्य जिले में लोगों की यातायात नियमों के प्रति जागरूकता और उनका पालन करने की स्थिति का विश्लेषण करना है। सरकार और पुलिस प्रशासन द्वारा संचालित जागरूकता अभियानों के माध्यम से हेलमेट और सीट बेल्ट के प्रयोग, ओवरस्पीडिंग से बचाव और नशे में वाहन न चलाने जैसी आदतों को बढ़ावा दिया गया है। इसके अतिरिक्त, स्कूल और कॉलेजों में शिक्षा कार्यक्रम, जन संपर्क अभियान, रोड शो, नुक्कड़ नाटक, चालान अभियान और सड़क सुरक्षा होर्डिंग एवं बैनर जैसी पहलें भी की गईं। इन अभियानों के परिणामस्वरूप सड़क दुर्घटनाओं में कमी, जन जागरूकता में वृद्धि, सामाजिक भागीदारी में सुधार और स्मार्ट ट्रैफिक मॉनिटरिंग तथा आधुनिक सुरक्षा उपकरणों के उपयोग में वृद्धि देखी गई है। हालांकि, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जागरूकता का असमान स्तर, नियम उल्लंघन की प्रवृत्ति और सतत प्रयासों की आवश्यकता जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। इसलिए, स्थानीय समाज, शैक्षणिक संस्थान और स्वयंसेवी संगठन की भागीदारी बढ़ाकर इन अभियानों की सफलता और व्यापक प्रभाव सुनिश्चित किया जा सकता है।

शब्द कुंजी—यातायात नियम, जागरूकता, कोरिया जिला, हेलमेट और सीट बेल्ट, सड़क सुरक्षा, जागरूकता अभियान, दुर्घटना रोकथाम, छत्तीसगढ़।

